वेबिनार प्रतिवेदन:

वेबिनार : बलूचिस्तान मुक्ति आंदोलन – विस्तृत रिपोर्ट

दिनांक 09. 09. 2020

.....

प्राकृतिक संसाधनों से लबरेज, सामरिक दृष्टिकोण से बेहद अहम और कम आबादी वाला बलूचिस्तान बीते 70 सालों से आजादी और अपने अधिकारों के लिए जूझ रहा है। बलूचिस्तान 11 अगस्त 1947 को अधिकृत रूप से एक आजाद मुल्क बन चुका था लेकिन इसके बावजूद 27 मार्च 1948 को पाकिस्तान ने बलूचिस्तान पर हमला कर उसको अपने कब्जे में ले लिया। 1948 में ही बलूच आवाम की तरफ से पाकिस्तान के खिलाफ विद्रोह की शुरुआत हुई और पाकिस्तानी सेना के खिलाफ सशस्त्र संघर्ष किया गया, जो अभी तक जारी है। यूं कहें कि बलूची तो 1948 से ही अपनी आजादी की जंग लड़ रहे हैं। बलोच आंदोलन (बलूचिस्तान की आजादी) को पाकिस्तानी सेना ने हमेशा ताकत से कुचलने की कोशिश की है। आर्थिक और सामाजिक पैमानों पर बलूचिस्तान पाकिस्तान के सबसे पिछड़े हुए राज्यों में से एक है। बलोच कौम शिक्षा की दृष्टि से बहुत पिछड़ी हुई है। पाकिस्तान के सार्वजनिक जीवन में उनकी भागीदारी बहुत कम है। पाकिस्तान ने बलूचिस्तान व बलूच लोगों का केवल दोहन ही किया है। उन पर पाकिस्तानी फौज हर दिन अत्याचार कर रही है। खासकर साल 2010 से पाकिस्तानी तालिबान और कट्टर सुन्नी गुटों ने भी बलूच आवाम पर अपने हमले तेज कर दिए हैं, जिसके चलते अब बलूचों का अस्तित्व ही खतरे में पड़ गया है। एक मोटे अनुमान के मुताबिक इन हमलों से हजारों बलूच लोगों की जानें चली गई और लाखों लोग विस्थापित हो गए हैं। आज हालात यह हैं कि पाकिस्तानी जुल्म एवं बर्बरता के खिलाफ बलूच आवाम मरने के लिए तैयार हैं, लेकिन झुकने के लिए नहीं। आजादी के इस आंदोलन को बलूच नेता विभिन्न बैनरों के तले दुनिया के कई हिस्सों से आगे बढ़ा रहे हैं। इसी कड़ी में एक ऐतिहासिक घटनाक्रम के तहत 09 सितंबर,2020 को आजाद बलूचिस्तान की मांग को लेकर दुनिया भर से बलूच नेता एक मंच पर एकजुट हुए और बलूचिस्तान मुक्ति आंदोलन को और तीव्र कर दिया। राष्ट्रीय सुरक्षा जागरण मंच (फैन्स) ने ऐतिहासिक पहल करते हुए दुनिया भर के बलूच नेताओं को मंच (अंतरराष्ट्रीय वेबिनार- बलूचिस्तान मुक्ति आंदोलन : संभावनाएं और चुनौतियां) प्रदान करके एक साथ लाने में अहम भूमिका निभाई। इस दौरान सभी बलूच नेता न सिर्फ एक साथ आए बल्कि एकसुर से आजाद बलूचिस्तान की आवाज को बुलंद किया। साथ ही, पहली बार बलूचों के निर्वासित सरकार के गठन पर सभी नेताओं में आम सहमति भी बनी।

बलूचों का कहना है कि पाकिस्तानी फौज हम पर जितने जुल्म करेगी, हम भी उतनी ही ताकत से और उभरकर सामने आएंगे। वे हमारी बहनों-बेटियों के साथ बलात्कार करते हैं, हमारे बच्चों को मौत के घाट उतार दे रहे हैं।

हमारा अस्तित्व खत्म करने पर आए हैं तो हम क्या करेंगे? हम भी उनको नहीं छोड़ेंगे। हम मरते दम तक लड़ेंगे और आजाद बलूचिस्तान को कायम करेंगे।

(फैन्स के राष्ट्रीय संरक्षक व राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल सदस्य श्री इंद्रेश कुमार):-

बलूच नागरिकों पर जुल्म के लिए पाकिस्तान को दोषी ठहराते हुए सभी बलोच नेताओं व संगठनों से एकजुट होकर बलूचिस्तान मुक्ति आंदोलन को आगे बढ़ाने का आह्वान किया गया। बलूचिस्तान के लोग काफी अर्से से संयुक्त राष्ट्र समेत दुनिया भर में अपने आवाम पर पाकिस्तान के जुल्मो सितम की कहानी बयां कर आंदोलन चला रहे हैं, भारत की ओर से भी दुनिया का ध्यान समय समय पर इस ओर खींचा जाता रहा है। पाकिस्तान का गठन देश के बंटवारे के बाद हुआ, जिसका बाद में 1971 में बंटवारा हो गया। आज पाकिस्तान पांच-छह टुकड़ों में बंटने व टूटने की कगार पर है। बलूचिस्तान, पश्तूनिस्तान, सिंध इससे अलग होना चाहते हैं। जो हालात बन रहे हैं, उससे यह स्पष्ट है कि आने वाले समय में पाकिस्तान की भौगोलिक स्थिति में जरूर बदलाव होगा।

विभाजन के समय ही बलूचिस्तान ने अंग्रेजों से कह दिया था कि हम पाकिस्तान में सम्मिलित नहीं होंगे। लेकिन मोहम्मद अली जिन्ना और अंग्रेजों ने कूटनीति से सैनिक आक्रमण करके इस पर जबरदस्ती कब्जा कर लिया और साल 1948 से बलूचिस्तान स्वतंत्र बलूचिस्तान का आंदोलन कर रहा है। पाकिस्तान बलूचिस्तान के लोगों पर अत्याचार कर रहा है। इस करतूत में चीन भी उसका साथ दे रहा है। पाकिस्तान अभी तक बलूचिस्तान में लाखों लोगों की हत्या कर चुका है। हजारों लोगों को अगवा किया और उन पर बेइंतहा जुल्म कर रहा है। पाकिस्तान की सेना ने टेंकरों और तोंपो से लाखों बलूच नागरिकों के कत्ल किए और लाखों बलूच लोगों को उजाड़ भी दिए। बहुत से बलूच भारत तथा दुनिया के अन्य देशों में रहते हैं जो लड़ रहे हैं और स्वतंत्र बलूचिस्तान चाहते हैं। बलूच और पश्तून नेता पाकिस्तान में सम्मिलित नहीं होना चाहते थे। उन्होंने हिंदुस्तान में शामिल होने या स्वतंत्र ईकाई के तौर पर बने रहने के लिए आवाज उठाई थी। विभाजन के समय बलूच लोगों ने स्पष्ट रूप से अपना मत बता दिया था, लेकिन उनकी सुनी नहीं गई। उसी समय से बलूचिस्तान के लोगों ने अपनी अस्मिता के लिए आवाज उठानी शुरू कर दी।

आज जरूरत इस बात की है कि बलूचिस्तान लिबरेशन मूवमेंट के सभी नेता एकजुट होकर अपनी मुहिम को आगे बढ़ाएं और उनकी इस मुहिम में सभी भारतवासी उनके साथ हैं। एक दिन सभी बलूच लोग अपने इस आंदोलन को सफल होते अवश्य देखेंगे। सभी बलूच नेता व मुक्ति आंदोलन से जुड़े संगठन आपस में हाथ मिलाएं, जैसे तिब्बत के नेताओं ने चीन की बर्बरता व प्रताड़ना से तंग आकर आपस में एकजुट हुए और सफलतापूर्वक निर्वासित सरकार का गठन किया। इस आंदोलन को सफल बनाने के लिए तीन महत्वपूर्ण सुझाव दिए गए। पहला- सभी बलूच नेता आपस में निर्णय करके एक सर्वमान्य नेता का चयन करें और किस देश में शरण लेना है यह तय करें। दूसरा- बलूच नेतृत्व को अपनी मान्यता के लिए दुनिया के देशों से गंभीर वार्ता करनी चाहिए। तीसरा- एक झंडा, एक नारा, एक विधान और एक कॉमन प्रोग्राम तय करें। बलूच नेता किसी कदम को उठाने

से पहले गंभीरता से विचार करें और फिर मंजिल तय करें। ठोस तरीके से निर्णय लेकर ही बलूचिसतान मुक्ति आंदोलन को कम समय में सफल बनाया जा सकेगा। पहले अपने रोडमैप का कॉमन एजेंडा तय करना चाहिए ताकि सभी बलूच नेता एकजुट रह सकें और दुनिया भर में मुहिम को आगे बढ़ा सकें। जिस तरह बलूच लोग अपने मुक्ति के लिए संघर्ष, बलिदान करते आए हैं, उसे एकजुट रहकर ही सफलतापूर्वक आगे बढ़ाया जा सकता है।

(राष्ट्रीय सुरक्षा जागरण मंच के राष्ट्रीय संगठन महामंत्री श्री गोलोक बिहारी राय जी):-

बलूचिस्तान लिबरेशन मूवमेंट को लेकर एक सम्मिलित आवाज उठनी चाहिए। आज का बलूचिस्तान विशाल भारत का हिस्सा रहा है। पूरा बलूचिस्तान वैदिक संस्कृति से जुड़ा है। बलूच लोगों से मराठी लोगों का अटूट संबंध रहा है। विभाजन के बाद से ही बलूच लोगों का संघर्ष अनवरत जारी है। इसके बावजूद बलूच लोग अपनी अस्मिता बनाए हुए हैं और आंदोलनरत हैं। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान कई सालों से बलूचिस्तान में काफी जुल्म कर रहा है। पाक सेना डिटेंशन कैंपों में बलूच लोगों को घोर यातनाएं देती है, यह किसी से छिपा नहीं है। बलूचिस्तान की आजादी की आवाज उठाने वालों को प्रताड़ित किया जाता है। पाकिस्तान की मंशा बलूच अस्मिता को समाप्त करने की रही है। जबकि बलूच नागरिक धार्मिक कट्टरता से काफी दूर रही है। ये अपनी अस्मिता की लड़ाई लड़ रहे हैं। पूर्व के बलूच नेताओं की शहादत बेकार नहीं जाएगी। अकबर खान बुगती जैसे नेता की शहादत इस आंदोलन को और बल देगी। सभी बलोच नेताओं, कार्यकर्ताओं को आपसी सहमति से वन लीडर, वन प्रोग्राम तय करना चाहिए ताकि यह आंदोलन सफलतापूर्वक अंजाम तक पहुंचे।

प्रोफेसर नाएला कादरी बलोच (प्रेसीडेंट बलोच पीपुल्स कांग्रेस, कनाडा) :-

बीते कई दशकों से पाकिस्तान की सरकार और मजबही कट्टरपंथियों ने बलूचिस्तान में बलूच लोगों पर जमकर अत्याचार किए हैं। इसके बावजूद बलूचों ने कभी पाकिस्तान या ईरान की गुलामी स्वीकार नहीं की है। पाकिस्तान की ओर से बलूच लोगों पर निरंतर दमन, अत्याचार जारी है। पाकिस्तान में बलोच, पश्तून, बाल्टिस्तान कोई खुश नहीं है। सभी इनसे आजादी चाहते हैं। हिंदुस्तान भी पाक आतंकवाद के जहर का सामना कर रहा है। इसके खिलाफ आज एक संयुक्त रणनीति, एकजुटता पर काम करने की जरूरत है।

बलूचों की कोशिश अब एक निर्वासित सरकार बनाने की है, जिससे बलूच लोगों की आवाज को मजबूती मिलेगी और लिबरेशन आंदोलन अंजाम तक पहुंचेगा। बलूच लोगों की आवाज को भारत से बल मिला है और ये सहयोग आगे भी मिलता रहेगा। बलूच के तीन दुश्मन हैं पाकिस्तान, ईरान और चीन। ये सभी खिलाफ में साजिशें कर रहे हैं। इसके बावजूद अपने आंदोलन को मजबूती से आगे बढ़ा रहे हैं। आज बलूचिस्तान में हर दिन कत्ल हो रहे हैं। जो बलूचों की आवाज बन सकते हैं, उनको सरेआम मारा जा रहा है। बलूच लोग अपनी धरती, अपनी अस्मिता को बचाने के लिए लगातार कुर्बानियां दिए जा रहे हैं। पाकिस्तान की इस बर्बरता और जुल्म से मुक्ति के लिए बलूच निर्वासित सरकार की जरूरत है। इसके लिए भारत समेत दुनिया के कई देशों से संपर्क किया गया है। हम एक कमिटी बनाकर सभी संगठनों से संपर्क करके निर्वासित सरकार की रुपरेखा तय करेंगे।

हमारी कोशिश भारत में निर्वासित सरकार बनाने की है। उम्मीद है कि इसमें भारत का सहयोग मिलेगा। इससे हम संगठित होकर बलूच अस्मिता की लड़ाई लड़ सकेंगे।

निर्वासित सरकार शांतिपूर्वक काम करेगी और आजाद बलूचिस्तान को कायम करेंगे। भारत से बलूच की आवाम को समर्थन देने और निर्वासित सरकार को सहयोग करने की अपील की गई। भारत से यह भी अपील की गई कि उनकी आवाज को संयुक्त राष्ट्र में बल दें ताकि बलूच लोगों पर पाकिस्तान की बर्बरता से मुक्ति मिल सके।

हकीम बलोच (बलोच नेशनल मूवमेंट, यूके) :-

पाकिस्तान ने बलूचिस्तान पर काफी बर्बरता व जुल्म किए हैं। 90 के दशक से बलूचिस्तान लिबरेशन मूवमेंट ने जोर पकड़ा। इस आंदोलन के पीछे का मकसद पाकिस्तान के कब्जे व जुल्म से मुक्ति की रही है। यदि बलूच आंदोलन को दुनिया भर से समर्थन मिला होता तो आज स्थितियां कुछ और होती। बलूच युवाओं ने काफी संघर्ष करके पाकिस्तान के खिलाफ आवाज को बुलंद किया है। बता दें कि पाकिस्तान ने इस मूवमेंट पर रोक लगा रखी है, लेकिन युवा फिर भी अपनी आवाज को जोरदार तरीके से उठाते हुए संघर्षरत हैं। इस आंदोलन को अब अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ज्यादा मुखर होने की जरूरत है तकि पाकिस्तान की बर्बरता, अत्याचार, क्रूरता को उजागर किया जा सके। यह मूवमेंट एक आजाद बलूचिस्तान के लिए संघर्ष कर रही है, इसे भारत समेत अन्य समर्थक देशों से सहयोग की जरूरत है।

फहीम बलोच (बलोच मानवाधिकार कार्यकर्ता, यूके):-

बलोच आवाम के मानवाधिकारों की संरक्षा पर विशेष जोर दिया गया। पाकिस्तानी हुक्मरानों ने बलूचिस्तान में जनसंख्या गणित बदलने के लिए हाल के दिनों में अपनी परियोजनाओं के लिए बाहर से लोगों को लाकर बसाने की नीति शुरू की थी। बलूच आबादी में साक्षरता दर बेहद कम होने और हुनरमंद लोगों की कमी की वजह को कारण बताया गया। इसकी आड़ पाकिस्तान ने कई इलाकों में बलूचों को अल्पसंख्यक बना दिया है। पहले ब्रिटिसर्श ने बलूचिस्तान को कई टुकड़ों में बांटा। उसके बाद पाकिस्तान ने बलूचों पर जुल्मो सितम शुरू कर दिए। पाकिस्तान की सेना आए दिन बलूच लोगों को अगवा करते हुए उन्हें मौत के घाट उतार देती है। बर्बरता इतनी है कि हजारों बलूच लोगों के घर नष्ट कर दिए गए, उनकी संपत्ति को नुकसान पहुंचाया गया। पाकिस्तान ने बलूचिस्तान में मानवाधिकार उल्लंघन की धज्जियां उड़ा दी है। पाकिस्तान और पाक सेना की नजर में हर बलूच नागरिक दोषी है।

पाकिस्तान ने ऐसे हालात कर दिए हैं कि बलूचिस्तान में अशिक्षा का बोलबाला है। वहां के लोगों को समुचित शिक्षा तक नहीं मिल पा रही है। पाक सेना ने वहां की शिक्षा व्यवस्था को तहस नहस करके रख दिया है। सीपीईसी कॉरिडोर के आसपास रह रहे लोगों को जबरन हटाया जा रहा है और उन्हें अगवा भी किया जा रहा है। इसमें अन्य देशों की साजिशें भी हैं। बलूचों का आंदोलन उस वक्त तेज हो गया, जब पाकिस्तान ने उनकी भूमि का एक बहुत बड़ा हिस्सा चीन के हवाले कर दिया। चीन यहां अपने दक्षिणी प्रांतों से पाकिस्तान में आर्थिक कॉरिडोर का एक अहम पड़ाव बनाना चाहता है। इसका निर्माण 2002 में शुरू हुआ। हालांकि इस पर पूरा नियंत्रण पाकिस्तान की संघीय सरकार का है। इसके निर्माण में चीनी इंजीनियर या मजदूर ही लगाए गए

हैं। बलूच लोगों को तकरीबन इससे बाहर रखा गया है। आसपास की जमीनें भी कथित तौर पर सरकारी अधिकारियों ने बलूच लोगों से लेकर भारी मुनाफे में चीन को बेच दी हैं।

प्राकृतिक संसाधनों से भरे इस इलाके में लोगों की आर्थिक दशा बहुत ही खराब है। आज भी यहां लोग बुनियादी सुविधाओं से दूर हैं। ग्वादर पोर्ट डेवलपमेंट के नाम पर इस भरपूर संपदा पर चीन ने अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया है। बलूचिस्तान में आए दिन अगवा होने वाले लोगों के मामले में दुनिया को दखल देना चाहिए। इस में मामले में पाकिस्तान को कटघरे में खड़ा करके बेनकाब करना चाहिए। पाकिस्तान पर दबाव बनाना चाहिए ताकि लापता बलूच लोगों की सच्चाई सामने आ सके।

ज्ञात हो कि बलूचिस्तान का पूरा क्षेत्र दक्षिण-पश्चिम पाकिस्तान, ईरान के दक्षिण-पूर्वी प्रांत सिस्तान तथा बलूचिस्तान और अफगानिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत तक फैला हुआ है, लेकिन इसका अधिकांश इलाका पाकिस्तान के कब्जे में है, जो पाकिस्तान के कुल क्षेत्रफल का लगभग 44 प्रतिशत हिस्सा है। इसी इलाके में अधिकांश बलूच आबादी रहती है। यह सबसे गरीब और उपेक्षित इलाका भी है। सीधी भाषा में कहें तो बलूचिस्तान के दक्षिण-पूर्वी हिस्से पर ईरान, दक्षिण-पश्चिमी हिस्से पर अफगानिस्तान और पश्चिमी भाग पर पाकिस्तान ने कब्जा कर रखा है। सबसे बड़ा हिस्सा तकरीबन पाकिस्तान के कब्जे में है। पाकिस्तान द्वारा भारत पर बलूचिस्तान में बगावत करवाने का आरोप पूर्णतया बेबुनियाद और भारत विरोधी पाकिस्तानी साजिशों का नया पैंतरा है। पाकिस्तान की यह चाल केवल दुनिया का भटकाने के लिए है। बता दें कि बलूच मुक्ति आंदोलन को कुछ कमियां भी रही हैं। बलूच नेता अभी तक शासन का कोई वैकल्पिक ब्लू प्रिंट लेकर सामने नहीं आ पाए थे। दूसरी कमी यह रही कि बलोच आंदोलन से जुड़े नेतृत्व का बुरी तरह से बंटा होना। हालांकि, इनमें से कइयों को दूसरे मुल्कों में सियासी पनाह जरूर मिल गई है। कुछ यूके में हैं, कुछ यूरोप में हैं, कुछ अमेरिका में हैं और कुछ अन्य देशों में भी हैं। ये लोग अहम विषयों पर एकमत नहीं हैं और इनके पास कोई ठोस राजनीतिक या आर्थिक प्रोगाम का भी अभाव नजर आया। परंतु इस अंतरराष्ट्रीय वेबिनार के बाद सभी बलूच नेताओं ने सकारात्मक पहल करते हुए एकजुट होने का संकल्प लिया और बलूचिस्तान मुक्ति आंदोलन को एकसाथ आगे बढ़ाने पर खासा जोर दिया।

.....